

Written by कुमार सौवीर  
Tuesday, 03 July 2018 19:46

: 0000000, 000000000 00 000 000000 000 0000000, 000000000 000 000000 000  
000000000 00 00000 000 000000 00000 : 00000000000 00 0000 00000, 00000  
00000-0000000000 00 00000000 00 : 00000 000000000000000 000000 00 00 00000 00 00  
000000-0000 00 00 0000000, 0000 00 00000 00 0000 0000000 0000 :



000000 000000

0000000000 : कसी से सहमत अथवा असहमत तो अलग बहस बन सकती है लेकिन इतना जरूर है कि दनिश जुयाल से भेंट करना कसी के भी क अलहदा अनुभूतिका सकता है

बरेली के अमर उजाला में संपादकपद से रटायरमेन्ट के बाद जुयाल जी अब देहरादून में बस गए हैं यहां देहरादून में भी वे हदुस्तान दैनिक में सम्पादक रह चुके हैं मिला, तो लगा कि मुझसे मिलने की ख्वाहिश उन्हें मुझसे ज्यादा थी कही ब भूखंड में तीनों भाइयों के परिवार रहते हैं सब क अलग मकान, लेकिन कही परसिर रसोई भी क

गेट से घुसते ही दो-मंजलि मकान की सीतियों पर खी जुयाल जी देख कर चहकप कंधे पर सवार थी कपालतू बलिली, और नीचे भौक्ता कुत्ता लैब्राडोर स्वर आत्मीय बाद में पता चला कि दोनों कही थाली में खाना खाते हैं, बनि गुर्रा नो झंझट, नो लपड-झप

इधर जुयाल जी से हाथ मिलाने की केशशि की ही थी, कि बलिली उचककर मेरे कंधे पर सवार हुई बनि टक्ति लैब्राडोर तो इतना कूदने लगा, मानो जन्म-जन्मांतर क रशिता हो उम्र बमुश्किल क कबरस, मगर स्नेह और ऊर्जा क वशिल भंडार शशिवत

कोई भी औपचारिकता नहीं जिसके जो मन करे, करता रहे कुछ देर तक मेरे कंधे पर मुफ्त सपर करने के बाद बलिली तो राजाजी अभयारण्य में रहने वाली अपनी बनी भांजियों ( शायद बड़ी बलिलियों ) से भेंट-मुलाकत करने नकिल गयी, लेकिन इधर कुत्ता अपने जात-बरादरी यानी हम जैसे वाच-डॉग्स से चुहल करने लगा रमिोट और जुयाल जी क चशमा मुंह में दबोचना उसक खास शगल है बेध की इत्ती, कि जिस प्लास्टिक वाली पाइप से उसे डांटा

जाता है, उसे वह चबा लेता है

रागिनी भाभी तो जन्मना प्रसन्न व्यक्तित्व बनि मुस्कन केउनके कोई भी बात शुरु ही नहीं होती। भोजन तो कुछ ऐसी खास रुचि प्रवधि से बनाती है कि कोई भी शख्स 25 फीसदी अतिरिक्त राशन उठा ले। मोटे लोग सावधान बातचीत में अव्वल, जुआल जी की वाकई अर्धांगिनी। जुयाल जी केजीवन केहर लम्हे-मो उन्हें न केवल याद है, बल्कि उसक हर स्पंदन, दंश और आनंद भी खूब जानती है भाभी। अभी कुछ दिनों से वे बीमार हैं। इसलिये हमारे आने की खबर सुनकर उनकी देवरानी कचिन में जुट गई। वह भी गजब की व्यक्तित्व नक्ती।

दनिश जी से लंबी बात हुई। रकिरड कथि। वे खुलकर बोलते हैं, जो सवाल आप न पूछ पा, उसक भी जवाब दे देंगे। बेहचिक। लेकिन कई मसलों पर साफ कह देंगे कि:-यह ऑफ द रकिरड है।

रात के शरबत-। -जन्त हचककर आत्मसात कथि। आधा पेग। क्स्ट्रा खींच लथि मैंने। भोजन केबाद सुबह स्वादष्टि पोहा। लैब्राडोर से नातेदारी बन ही गई थी। अब शायद उसे वदिई क अहसास हो चुक था, वह शांत लग रहा था। गम केबादल छंट जा, यह सोच कर मैंने चलते वक्त उसक माथा चूम लथि।

बस परि क्या था, अपनी औकत में आ गया। आदमकद्र छलांगे-कुलांचे मुझ पर भरने लगा। उसकी लार से सारा कप। भीगने केडर से मैं जुयाल जी केभाई की कर में झपट कर घुस गया, जो मुझे पेट्रोलथिम यूनविरसटी परसिर छो। ने जा रहे थे।

आधा घंटा केसपर केदौरान जुयाल जी केछोटे भाई ने मुझे पहाड़ केबारे में कई मोटी-मोटी मगर गहरी जानकरथिं थमा दी।

अब बताइ, कि अब कोई कैसे भूल सकता है जुयाल जी केपरिवार के।

(00000 00000 00 00 00 00000 00 00000 000000 000000 00 000 00000 000000 0 00000 00 00000 0000000 000000 00 0000 -0000 0000000 -000000 000000 00 000000 00000000 )